JAI BHAWANI SHIKSHAN PRASARAK MANDAL'S

ARTS & SCIENCE COLLEGE SHIVAJINAGAR, GADHI

प्रा.डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर

हिंदी विभागाध्यक्ष

प्रयोजनमूलक हिंदी

बी.ए. द्वितीय वर्ष

(पेपर क्र. VIII)

सत्र – चतुर्थ (Semester – IV)

8.1.5. हिन्दी शब्द - सम्पदा का परिचय।

प्रा. डॉ. संतोषकुमार लक्ष्मण यशवंतकर
हिंदी विभागाध्यक्ष
कला एवं विज्ञान महाविद्यालय
शिवाजीनगर, गढ़ी

हिन्दी शब्द - सम्पदा का परिचय।

प्रस्तावना :-

किसी भाषा का शब्द - समूह उस भाषा - विशेष का शुद्ध रूप नहीं हुआ करता है । यदि यह कथन किसी भाषा के लिए अपवाद सिद्ध होगा तो निश्चय ही उस भाषा के लिए ' मृतक विशेषण का प्रयोग किया जा सकता है । कोई भाषा अपने व्यावहारिक क्षेत्र में जितने शब्द - समूह भाषा विशेष के साहित्य में प्रयुक्त , समाज में व्यवहत , कोशों में संगृहीत , चिन्तन और दर्शन के क्षेत्र में प्रयुक्त करती है , उनका रूप या ढाँचा अनुभूत शब्दों के आधार पर खड़ा रहता है । शब्द - समूह के प्रयोग की दृष्टि से कोई भी भाषा विशुद्ध नहीं कही जा सकती । विशुद्ध ' से केवल इतना ही तात्पर्य है कि अन्य भाषाओं के शब्दों के ग्रहण के साथ - साथ भाषा विशेष ने अपनी जननी भाषाओं के शब्दों का निर्वाह किया है। ऐसी अवस्था वाली भाषाओं में अन्य भाषाओं से शब्दों के ग्रहण की मात्रा कम ही रहती है। अब हम हिंदी भाषा के संदर्भ में शब्द-समूह का विवेचन करेंग।

हिन्दी शब्द - समूह का वर्गीकरण :

हिन्दी - शब्द - समूह को अध्ययन की सुविधा के लिए भाषा - वैज्ञानिक के द्वारा तीन भागों में बाँटा गया है- १) भारतीय आर्य भाषाओं का शब्द - भाडार , २) भारतीय आर्येतर भाषाओं से आये हुए शब्द , ३) विदेशी भाषाओं से आगत शब्द । क्रम से इनका विवेचन निम्न प्रकार से है-

1.भारतीय आर्य भाषा का शब्द - भंडार :

किसी भी भाषा के शब्द - समूह को चार भागों में बाँटा जा सकता है । १) क्रियापद २) अव्यय , ३) विभक्तियाँ , ४) सर्वनाम । ये ही चार ऐसे स्तम्भ है , जिन पर भाषा का भवन निर्मित होता है । ये चारों रूप या भाग भाषा विशेष के अपने हुआ करते हैं । संशा ' शब्द पाँचवाँ स्तम्भ होता है , जिसमें परिवर्तन होते रहते हैं । परन्तु उपर्युक्त चार स्तम्भों का किसी भाषा में आदान - प्रदान नहीं होता । संस्कृत के अधिक निकट होते हुए भी , हिन्दी में करता है ' अंश के लिए ' करोति ' का प्रयोग नहीं होगा । जब अपनी जननी भाषाओं से इस प्रकार का आदान - प्रदान संभव नहीं है तो विदेशी भाषाओं की तो बात ही क्या । जैसे संज्ञा शब्द अन्य भारतीय आर्यभाषाओं से आये है , यथा - मराठी - प्रगति , लागू , चालू , आदि : गुजराती हड़ताल आदि जो अपने तद्भव रूप में ही हिन्दी आदि : गुजराती हड़ताल आदि जो अपने तद्भव रूप में ही हिन्दी में प्रयुक्त होते

हिन्दी शब्द - समूह का वर्गीकरण :

हैं में प्रयुक्त होते हैं; आज ऐसे शब्दों को पृथक् करना कठिन है । भारतीय भाषाओं से आये शब्दों के तीन रूप हिर्न्दी में प्रचलित है

अ) तत्सम :

तत्सम शब्द वे होते हैं जो अपने परिनिष्ठित रूप में ही दूसरी भाषा में प्रवेश कर जाते हैं । ऐसे शब्दों के लिए हिन्दी संस्कृत की बहुत अधिक प्राणी है । प्राकृत और अपभ्रंश के शब्द जब हिन्दी में , तत्सम रूप में प्रयुक्त होते हैं तो उनका भी संस्कृतीकरण हो जाता है । साहित्यिक एवं पढ़े लिखे हिन्दी के लोगों में ऐसे शब्दों का व्यवहार बहुत है । लिखित साहित्य में भी इनकी संख्या बहुत ' अधिक है । इस नये युग में जब से हिन्दी राष्ट्रभाषा के पद पर शोभित हुई है तब से तत्सम संस्कृत शब्दों का प्रवेश हिन्दी क्षेत्र में दिनों - दिन बढ़ रहा है । ऐसे शब्दों के प्रयोग के मूल में विदवत्ता के साथ - साथ आवश्यकता भी कार्य करती है । अन्य भारतीय भाषाओं के शब्द अपने तत्सम रूप में हिन्दी में कम ही आये है । ऐसे शब्दों के प्रयोग में जन - प्रवाह का प्रभाव कम पड़ता है । अधिकांश में संज्ञा शब्द प्रथमा के एकवचन के ही रहते है ।

हिन्दी शब्द - समूह का वर्गीकरण :

आ) अर्द्धतत्सम शब्द :

अर्द्धतत्सम शब्द होते है जो प्राकृत - भाषा के उच्चारण से बिगड़ते - बि़गड़ते कछ और ही रूप में प्रचलित हो गये है । ये शब्द भी मूलत : संज्ञा शब्द ही है । क्रियापद और सर्वनाम रूप तो तद्भव या विकसित हुए रूपों में ही हिन्दी के अपने है । अर्द्धतत्सम शब्द , आधुनिक काल में संस्कृत शब्दों से ही विकृत होकर आये है । उदाहरण के लिए - बच्छ , अग्नि , कारज , अच्छर , अग्या आदि शब्द अपनी अर्द्धतत्समावस्था में ही है । पर इन शब्दों की संख्या तत्सम और तद्भव दोनों ही प्रकार के शब्दों की अपेक्षा कम है ।

इ) तद्भव शब्द :

'तद्भव' का अर्थ है उससे (संस्कृत से) उत्पन्न हुए । ' ऐसे शब्द या तो प्राकृत से सीधे हिन्दी में आये है अथवा संस्कृत से प्राकृत अपभ्रंश आदि के माध्यम से विकसित होकर हिन्दी के शब्द में प्रविष्ट हुए हैं । ऐसे शब्दों की संख्या हिन्दी में सर्वाधिक है । बहुत से तद्भव शब्द ऐसे भी है जिनके विकास की मूल अवस्था संस्कृत में देखने को नहीं मिलती । सम्भव है वे शब्द अन्य भारतीय आर्य अथवा आयतर भाषाओं से आये होंगे ।

हिन्दी शब्द - समूह का वर्गीकरण :

जनता अपने व्यवहार में अधिकांश में इन्ही शब्दों का प्रयोग करती है । कुछ पढ़े - लिखे लोगों की वृत्ति इन शब्दों के प्रति उदारता की नहीं रहती , और इन्हें ' मामीण ' या ' गवारू ' कहकर हेय समझा जाता है । वास्तव में ये शब्द हिन्दी की सच्ची निधि है और भाषा - वैज्ञानिक - विकास की अमूल्य सम्पत्ति भी ।

२) भारतीय आर्येतर भाषाओं से आगत शब्द :

अन्य भारतीय परिवारों की भाषाओं से लिये गये शब्दों की ग्रहण - प्रक्रिया बहुत प्राचीन काल में ही आरम्भ हो गई थी । परन्तु जैसे ही उत्तर - दक्षिण या आर्य - अनार्य की संकीर्ण एवं साम्प्रदायिक भावना उजागर हुई , तभी से भाषाओं के शब्द - समूह का एवं सांस्कृतिक - विचारधारा का आदान - प्रदान समाप्त हो गया और देश में भावात्मक एकता छिन्न - विच्छिन्न होती देख पड़ी । परन्तु फिर भी संस्कृत भाषा ने आन्तरिक एकता के सूत्रों को विच्छिन्न नहीं होने दिया । फलतः इस क्षेत्र में शब्द - समूह का जो आदान - प्रदान हुआ है ; वह उत्तर दक्षिण की संकीर्ण मनोवृत्ति की सूचना देता है । द्रविड़ भाषा में ' पिल्लै ' शब्द ' पुत्र ' के अर्थ में प्रयुक्त होता है , परन्तु हिन्दी में ' पिल्ला ' कुत्ते के बच्चे को कहते है ।

हिन्दी शब्द - समूह का वर्गीकरण :

अनुमान है कि टवर्ग की ध्वनियाँ भी हिन्दी में द्रविड़ परिवार से आई । मूल भारोपीय परिवार में ये ध्वनि थी ही नहीं । द्रविड़ परिवार की तमिल , तेलुगु , मलयालम , कन्नड़ आदि अन्य भाषाओं के शब्द भी हिन्दी में आये है । कोल भाषा के हाँडी ' कोही शब्द भी हिन्दी में प्रचलित है । सम्भव है , बीस - बीस के अनुसार गिनने की प्रणाली भी कोल भाषाओं से ही आई हो । मुण्डा परिवार का भी हिन्दी पर प्रभाव है । ' चार ' के अनुसार गंडा पर गिनने की शैली मुण्डा की ही देन है । चीनी भाषा का ' चाय ' , तिब्बती का ' चुभी ' शब्द भी हिन्दी में प्रचलित है । इसी प्रकार बंगला , मराठी , आदि अन्य भारतीय भाषाओं के अनेक शब्द भी हिन्दी में प्रयुक्त होते है ।

३) विदेशी भाषाओं के शब्द :

हिन्दी - प्रदेश पर लगभग एक हजार वर्षों के लम्बे काल तक विदेशी शासन रहा है । इस कार्यकाल में कई विदेशी भाषाओं के तत्त्व हिन्दी में प्रवेश पा गये हैं । इस परतंत्रता का यह भी परिणाम हुआ है कि हिन्दी अन्य भारतीय भाषाओं के नैकट्य में नहीं आ सकी , विदेशी भाषाओं के शब्दों के उलट - फेर में ही लगी रही । इससे एक तो भारतीय एकता सण्डित हुई , दूसरे भारतीय भाषाएं एक - दूसरी से बहुत दूर बनी रहीं ।

हिन्दी शब्द - समूह का वर्गीकरण :

इससे एक तो भारतीय एकता सण्डित हुई , दूसरे भारतीय भाषाएं एक - दूसरी से बहुत दूर बनी रहीं । भारतीय भाषाओं की एकता के सम्बन्ध में जो आज कार्य हो रहा है यह आज से दो सौ वर्ष पहले ही हो जाना चाहिए था । विदेशी शासन के कारण एक हानि यह भी हुई कि विदेशी भाषा तत्त्वों को हम विवेकपूर्वक ग्रहण नहीं कर पाये । यों ही अंधाधुन्ध अपनाते गये । विदेशी प्रभाव के कारण आये हुए शब्दों को दो वर्गों में रखा जा सकता है- १) मुसलमानी प्रभाव से आये शब्द , २) यूरोपीय प्रभाव से आये शब्द । ये दोनों प्रभाव शासक रूप में ही भारत में आये हैं।

अ)मुसलमानी प्रभाव से आये हुए शब्द :

इनमें वे सभी शब्द सम्मिलित हैं , जो विदेशी संस्थाओं - जैसे कचहरी , फौज , स्कूल , धर्म आदि से सम्बन्ध रखते हैं । दूसरे शब्द वे हैं जो विदेशी प्रभाव से आने वाली वेशभूषा , खेल - कूद , मशीन , कारखाने , फैशन आदि के लिए प्रयुक्त होते हैं । फारसी , अरबी , तुर्की , पश्तो आदि भाषाओं के शब्द हिन्दी में मुसलमानी प्रभाव से आये हैं । ऐसे शब्दों का आगमन ईसा की एक हजारवीं शताब्दी के आसपास से ही प्रारम्भ हो गया था ।

हिन्दी शब्द - समूह का वर्गीकरण :

क्योंकि उसी समय में सिन्ध पंजाब , आदि प्रदेशों पर इन विदेशियों का आक्रमण प्रारम्भ हो गया था । १२०० वीं सदी तक ये विदेशी उत्तर भारत में आकर जम गये थे । उसके पश्चात् लगभग ६०० वर्षों तक उनका शासन इस प्रदेश पर रहा । अत : इन भाषाओं के शब्द सहज ही उत्तर भारत की भाषाओं में विशेष रूप से पंजाबी , राजस्थानी और हिन्दी में प्रविष्ट हो गए । उसी समय में लिखे गये ' रासो ' काव्यों में एक नहीं हजारों शब्द इन भाषाओं के प्रयक्त हुए हैं । तुलसी , सूर जैसे वैष्णव कवि भी इनके प्रभाव और प्रवाह को अस्वीकार नहीं कर सके । इनमें भी फारसी शब्दों की संख्या हिन्दी में अधिक है , क्योंकि मुसलमानी बादशाहों की दरबारी भाषा फारसी ही थी । अरबी , तुर्की आदि के शब्द भी फारसी के माध्यम से ही हिन्दी में आये है । उदाहरण के लिए बहुप्रचलित कुछ शब्द ये है -

१) फारसी शब्द : आदमी , कमर , सर्च , चश्मा , चाकू , दाग , मौजा आदि ।

२) अरबी शब्द : अदालत, इम्तिहान, औरत, तारीख, मुकदमा, सिफारिश आदि ।

३) तुर्काँ शब्द : बोतल , चकमक , तोप , लाश , आका , कैची , दरोगा , बीबी , बावेची , खजांची , कुली आदि ।

४) पश्तो शब्द : पठान , रोहिला (रोह - पहाइ) आदि ।

हिन्दी शब्द - समूह का वर्गीकरण :

ब) यूरोपीय प्रभाव से आये हुए शब्द :

हिन्दी - क्षेत्र से यूरोपीय लोगों का सम्पर्क लगभग तीन सौ वर्ष पुराना है । इनका प्रारम्भिक प्रभाव सागर तटवासी लोगों पर ही पहले - पहले पड़ा , क्योंकि इनका प्रवेश समुद्री मार्गों से उन्हीं क्षेत्रों में सर्वप्रथम हुआ था । यही कारण है कि हिन्दी के प्राचीन साहित्य में यूरोपीय शब्दों का अभाव है । लगभग विगत २०० वर्षों के काल में इन भाषाओं के शब्दों की पर्याप्त संख्या हिन्दी में आई । इन विदेशी शब्दों में सर्वाधिक संख्या अंग्रेजी शब्दों की है । ये सभी शब्द संज्ञा शब्द ही है । कभी - कभी तो कोई वाक्य ऐसा लगता है कि जैसे अंग्रेजी ही बोली जा रही है , यदि वाक्य के अन्त में हिन्दी का क्रियापद न जोड़ा जाए । परन्तु इन शब्दों के अधिक प्रयोग से हिन्दी को बहुत हानि नहीं हुई है । साथ ही यह प्रवृत्ति हिन्दी की पाचन - क्षमता को भी द्योतित करती है । अंग्रेजी शब्दों के अतिरिक्त पुर्तगाली , डच , फ्रेंच शब्द भी हिन्दी में घुसे हैं , जो आज हिन्दी की अपनी सम्पत्ति बन गये हैं । आज राष्ट्रभाषा हिन्दी को समर्थ बनाने के लिए इन विदेशी शब्दों के प्रयोग पर थोड़ा संयम बरतना आवश्यक है । उदाहरण के लिए कुछ शब्द –

हिन्दी शब्द - समूह का वर्गीकरण :

उदाहरण के लिए कुछ शब्द –

१) अंग्रेजी : इंच , कलक्टर , पेन , रेल , स्कूल आदि ।

२) पुर्तगाली : कमरा , नीलाम , पादरी , आल्मारी आदि ।

३) फ्रांसीसी : कारतूस , कूपन , अंग्रेज

४) डच : तुरूप , बम । जर्मन आदि भाषाओं के शब्दों का हिन्दी में अस्तित्व देखने को नहीं मिलता है , पर चीनी और जापानी आदि भाषाओं के शब्द अवश्य पाये जाते हैं । कुछ शब्द अवश्य पाये जाते हैं।

धन्यवाद...

अस्वीकरण

निम्नलिखित वीडियो विभिन्न पुस्तकों , मीडिया , इंटरनेट अंतरिक्ष , आदि से एकत्र किए गए शोध और केस स्टडीज पर आधारित है । संतोषकुमार यशवंतकर और निर्माता वीडियो में निहित जानकारी की सटीकता , सामग्री , पूर्णता , वैधता या विश्वसनीयता के लिए किसी भी जिम्मेदारी या दायित्व को स्वीकार नहीं करते हैं । वीडियो पूरी तरह से शैक्षिक उद्देश्यों के लिए बनाया गया है और किसी व्यक्ति , व्यक्तियों , संस्था , कंपनी या किसी के शरीर को नुकसान पहुंचाने , चोट पहुंचाने या बदनाम करने के इरादे से नहीं बनाया गया है । इस वीडियो का उद्देश्य किसी भी धर्म , समुदायों या व्यक्तियों की अफवाहों को फैलाना , अपमानित करना या उन्हें चोट पहुंचाना या किसी व्यक्ति (जीवित या मृत) के प्रति असहमति पहुंचाना नहीं है , दर्शक को हमेशा अपना परिश्रम करना चाहिए और जो कोई भी इसमें शामिल होना चाहता है वीडियो में इसके लिए पूरी जिम्मेदारी लेता है । साथ ही , यह उनके स्वयं के जोखिम और परिणामों पर किया जाता है । इस वीडियो में शामिल सामग्री किसी भी क्षेत्र में सेवाओं या प्रशिक्षित पेशेवरों के लिए प्रतिस्थापन या प्रतिस्थापन नहीं कर सकती है , लेकिन वित्तीय , चिकित्सा , मनोवैज्ञानिक या कानूनी मामलों तक सीमित नहीं है । डॉ । संतोषकुमार यशवंतकर और निर्माता वीडियो पर आधारित किसी भी कार्रवाई के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उत्पन्न होने वाले किसी भी प्रत्यक्ष , अप्रत्यक्ष , निहित , दंडात्मक , विशेष , आकस्मिक , या अन्य के लिए जिम्मेदारी नहीं लेते हैं । डॉ । संतोषकुमार यशवंतकर और वीडियो के निर्माता किसी भी तरह के परिवाद , निंदा या किसी अन्य प्रकार के दावे या किसी भी प्रकार के दावे को स्वीकार करते हैं । दर्शकों को विवेक की सलाह दी जाती है शर्ते लाग करें ।

इस व्हिडियों / PPT का उदेश्य केवल अध्यापन के लिए है, न कि प्रसिद्धी पाने के लिए। इसका समग्र श्रेय सभी महानुभवों को जाता है जिन-जिनकी सामग्री का उपयोग यह बनाने के लिए हुआ है। मैं उन समस्तजनों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हुँ जिनकी सामग्री का उपयोग यह व्हिडियों / PPT के लिए हुआ है। यह मेरी कोई मौलिक उपलब्धी नहीं है और न ही कोई सृजनात्मकता। इस का उदेश्य केवल और केवल छाञों तक पहुँचाना हैं। इससे किसीके दिल को प्रत्यक्ष या परोक्षरुप से कोई ठेस या आहत पहुँचती है तो मैं उसके लिए क्षमाप्रार्थी हुँ - आपका प्रा.डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर

JAI BHAWANI SHIKSHAN PRASARAK MANDAL'S

ARTS & SCIENCE COLLEGE SHIVAJINAGAR, GADHI

जय भवानी शिक्षण प्रसारक मंडळ, गेवराई संचलित (कला व विज्ञान महाविद्यालय शिवाजीनगर, गढी ता.गेवराई जि.बीड)

प्रा.डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर